8

माँडणा

पिछले पाठ में आपने कोलम लोककला के विषय में पढ़ा। इस पाठ में आप माँडणा लोककला के विषय में सीखेंगे। माँडणा राजस्थान एवं मध्य प्रदेश की एक पारम्परिक लोककला है, जो धरती पर बनाई जाती है। यह प्राय: घर के बाहर, दीवार के साथ लगे आंगन में अथवा कोनों में बनाई जाती है। माँडणा भूमि चित्र है, इन्हें भूमि अलंकरण भी कहते हैं। ये प्राय: गोबर से लीपी हुई जमीन पर गेरू और खडिया से बनाये जाते हैं। इनको बनाने के लिए शुभ अवसर, त्योहार जैसे दशहरा, दीपावली, होली आदि पर्व-त्यौहार हैं। इन्हें केवल महिलाएँ ही बनाती हैं। माँडणा का शाब्दिक अर्थ माँडने अथवा बनाने से है, लेकिन लोककला में 'माँडणा' केवल बनाने के अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता, बल्कि माँडणा लोक चित्रकला परम्परा में एक विधा, एक शैली के रूप में प्रचलित है। आदिम समय से लेकर आज तक माँडणा घर-आँगन की सुन्दरता बढ़ाते आया हैं। इनमें धरती को सजाने-संवारने का भाव निहित है। माँगलिक अवसरों, पूजा-अनुष्ठान, पर्व त्यौहारों के आगमन, यज्ञादि पर चावल के पीठे, जुवार के आटे, हल्दी-कुंकुंम, गेरू-खड़िया, पत्थर के सफेद और रंगीन चूर्ण और मिट्टी रंगों से माँडणे बनाये जाते हैं। मुख्य रूप से माँडणा गेरू और खड़िया से ही बनाया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद आप :

- माँडणा कला को जान सकेंगे;
- माँडणा कला के महत्त्व के बारे में जान सकेंगे;
- देश के विभिन्न अंचलों में माँडणा किन नामों से जाना जाता है और उनमें अन्तर के बारे में उल्लेख कर सकेंगे;
- माँडणा बनाने की विधि, माध्यम और शैली को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- माँडणों में प्रयुक्त विभिन्न अभिप्रायों के अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- माँडणों को सहजता से बनाना सीख सकेंगे।

8.1 सामान्य परिचय

माँडणों में मुख्य रूप से फूल, पत्ते, बेल बूटे, पशु-पक्षियों के साथ ज्यामितिक आकृतियाँ अधिक बनाई जाती हैं। फूलों में कमल का फूल, त्रिभुज, चतुर्भुज, वृक्ष तथा आड़ी-खड़ी रेखाएँ प्रमुखता से बनाई जाती हैं। ये घर की शुभता को प्रकट करते हैं। सारे भारत में जमीन पर चित्र बनाने की परम्परा का चलन है। राजस्थान तथा मध्यप्रदेश में इन्हें 'माँडणा', उत्तर प्रदेश में चौक पुराना, बंगाल में 'अल्पना',, गुजरात-महाराष्ट्र में 'रंगोली', बिहार में 'अरिपन' दक्षिण में 'कोलम' कहा जाता है। इन सबके नाम, माध्यम और बनाने के तरीके बिल्कुल अलग-अलग हैं, परन्तु, ये सब जमीन पर ही बनाये जाते हैं।

माँडणा प्राय: घर-सज्जा और अनुष्ठान की पूर्ति के लिए बनाये जाते हैं। ये मंगल सूचक हैं और घर-आँगन को सौन्दर्य से भर देते हैं। इनको देखने मात्र से ही मन खुशी और आनन्द से भर उठता है। इनके रहने से बाहरी बाधाओं का घर में प्रवेश नहीं होता। इनसे अतिथियों का स्वागत और देवी-देवताओं का आह्वान करते हैं। इन्हें महिलाएँ पर्व-त्यौहारों पर अपने हाथों से बनाती हैं।

हम यहाँ केवल गेरू और खड़िया से बनाये जाने वाले 'माँडणा' के बारे में जानकारी हासिल करेंगे।

इनमें आकारों यानी अभिप्रायों की संख्या सबसे अधिक होती है। हर अंचल के माँडणा अभिप्राय संस्कृति के अनुरूप प्राय: अलग-अलग हैं, जिससे उनकी पहचान बनती है। ये पर्व-त्यौहार, अनुष्ठान, स्थान और अवसर विशेष पर मिलते हैं। जैसे दीपावली पर महालक्ष्मी के रथ का माँडणा, देव प्रबोधिनी एकादशी का माँडणा और मकर संक्रान्ति का माँडणा आदि। माँडणों का मुख्य पर्व दीपावली है, जिसमें घर-आँगन के कोने-कोने में माँडणा बनाये जाते हैं।

- माँडणों के मुख्य स्थान
    1. गोबर से लिपा-पुता आँगन एवं तुलसी के आस-पास।
    2. दरवाजे के बाहर, बेदियाँ, चबूतरे।
    3. चौखट के बाहर और भीतर।
    4. देवघर के आस-पास।
    5. घर के कोने।
- माँडणा बनाने के अवसर-माँगलिक समारोह, पर्व त्यौहार, नया घर बनने और लीपने के पश्चात।

8.2 पारम्परिक माँडणा अभिप्राय

अब हम विभिन्न प्रकार के पारम्परिक माँडणा मोटिफ सीखेंगे।

1. पगल्या (पदचिह्न) माँडणा

पगल्या का अर्थ पदचिह्न से है। ये पदचिह्न आगमन के प्रतीक हैं। भारतीय संस्कृति में पैर-पूजने की परम्परा है। ये पैर, देवी-देवता, पूर्वज, अतिथि और पराशक्तियों के आगमन का मार्ग प्रशस्त

करती है। इसी उद्देश्य से प्रत्येक घर में पगल्या का माँडणा बनाया जाता है। यह माँडणा चौखट के बाहर-भीतर, देवस्थान, सीढ़ियों आदि पर बनाये हैं। इसे 'लक्ष्मी-विष्णुजी के पग' भी कहा जाता है। दीवाली पर लक्ष्मी पूजा में पगल्या माँडणा घर के प्रवेशद्वार की सीढ़ियों से लेकर लक्ष्मी पूजा के स्थल तक बनाये जाते हैं। इसमें दोनों पैरों के निशान बनाये जाते हैं। चौखट में इन्हें जोड़ी के साथ और आगे बढ़ते हुए एक-एक पैर के रूप में बनाया जाता है। दीपावली पर यह एक अनिवार्य माँडणा है।

चित्र 8.1

2. लक्ष्मीजी का रथ माँडणा

लक्ष्मीजी के रथ का माँडणा दीपावली या अमावस्या को लक्ष्मीपूजन की जगह बनाया जाता है। इसमें लक्ष्मी का वास होता है। इसमें सोलह चौकोर खाने बनाये जाते हैं, जिनमें सोलह जलते दिये लगाये जाते हैं। इस चौखाने को चार पँखुड़ी के कमल फूल से सजाया जाता है, छल्ले और कंगूरे बनाकर अलंकृत किया जाता है। इसी के साथ 'देवी ज्योत' का माँडणा भी बनाया जाता है, जो 'दीपक' के प्रकाश का प्रतीक होता है। समीप ही आठपँखुड़ी का कमल फूल और अन्य शुभंकर माँडणे भी उकेरे जाते हैं। कमल फूल पर लक्ष्मीजी विराजती हैं।

चित्र 8.2

3. चार पँखुड़ी फूल माँडणा

माँडणा कला में प्रमुख रूप से कमल फूल का अंकन किया जाता है। इसमें चार पँखुड़ी, छह पँखुड़ी और सोलह पँखुड़ी तक के कमल फूल बनाये जाते हैं। अधिकतर चार पँखुड़ी और आठ पँखुड़ी के कमल फूल माँडणा हर जगह मिल जाते हैं। कमल की चार पँखुड़ी माँडणा बनाने में पारम्परिक विधि और रंगों का प्रयोग किया जाता है। माँडणे के आसपास कई तरह के अलंकरण अभिप्राय बनाकर उसे सजाया जाता है। छह पँखुड़ी माँडणा घर, आँगन या देवस्थान आदि में बनाया जा सकता है। माँडणा सदैव पँखुडियों पर विस्तारित होता है, जो सृष्टि के विस्तार का प्रतीक होता है।

4. अठपँखुड़ी का फूल माँडणा

माँडणा कई पर्व-त्यौहारों पर, पूजा-पाठ और अनुष्ठानों के अवसरों पर बनाये जाते हैं। इन अवसरों में मकर संक्रान्ति, देव शयनी-देवउठनी ग्यारस, होली आदि हैं। इनमें विशेषकर कमल का अठपँखुड़ी फूल माँडणा ही बनाया जाता है। अभ्यास 2 में दर्शाया माँडणा अठपँखुड़ी कमल का माँडणा है। इसे घर, आँगन और देवस्थान की जगह पर छोटे-बड़े आकार में बनाया जा सकता है। कमल माँडणा कला का सबसे लोकप्रिय और महत्त्वपूर्ण अभिप्राय है।

चित्र 8.3

5. चौखट माँडणा

चौखट माँडणा घर के मुख्यद्वार के भीतर बनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य देवी-देवताओं का आह्वान है, देवताओं का स्वागत है, घर में शुभतया का स्वागत करना और बाधाएँ दूर करना है। चौखट को सजाना भी इसका सौन्दर्यात्मक उद्देश्य है।

चौखट माँडणा कई तरह से बनाया जाता है। प्रायः इसका रूप त्रिभुजात्मक होता है। दीपावली पर चौखट माँडणा हर घर में बनाया जाता है। इसका स्थान निश्चित है, इसे अन्य और किसी जगह नहीं बनाया जाता है।

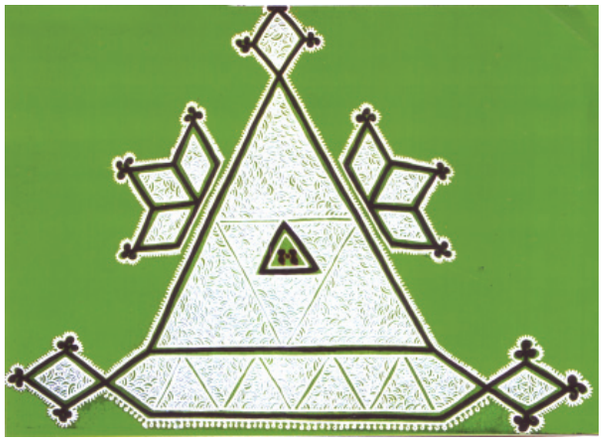

चित्र 8.4

8.3 माँडणा बनाने हेतु आवश्यक साम्रगी

- ड्राइंग बोर्ड
- पैंसिल
- स्केल
- 3, 5, 7, एवं 12 नम्बर के गोल ब्रुश
- सफेद, ब्राउन, नीला पोस्टर कलर
- प्लास्टिक का छोटा मग
- ड्राइंग पिन
- रबर
- ड्राइंग शीट या हार्ड बोर्ड
- गेरु
- फैवीकॉल

8.4 माँडणा बनाने की परम्परिक विधि

शिक्षार्थियो, आपने माँडणा के पारम्परिक अभिप्रायों के विषय में सीखा। अब माँडणा बनाने की पारम्परिक विधि सीखते हैं।

प्रथम चरण : भूमि तैयार करना: सबसे पहले घर-आँगन को गोबर और पीली मिट्टी के घोल से लीपकर माँडणों के लिये भूमि तैयार की जाती है। यह कार्य घर की महिलाएँ करती हैं।

द्वितीय चरण : रंग तैयार करना: गेरू और खड़िया का बारीक चूर्ण बनाकर उनका अलग-अलग कटोरियों में थोड़ा गाढ़ा घोल लिया जाता है। स्थायित्व के लिये इन रंगों में घिसा हुआ गोंद अथवा फैवीकोल मिलाया जाता है। गेरूवे अथवा लाल रंग के लिये कहीं हिरमची का भी उपयोग किया जाता है। सफेदी के लिये कहीं-कहीं चूने को भी काम में लेते हैं, जिसमें नील या नीला रंग मिला दिया जाता है, जिससे माँडणा नीली रूप देते हैं। चूने से ऊँगलियाँ कट जाती हैं, इसलिए आजकल इसका उपयोग कम ही होता है।

तृतीय चरण : माँडणा बनाना: माँडणा प्राय: महिलाएँ बनाती हैं। महिलाएँ माँडणा बनाना बचपन में अपनी माताओं से सीखती हैं। माँडणा बनाने की लोककला इसी परम्परा की देन है। माँडणा बनाने के लिए किसी प्रकार की कूँची या ब्रश का उपयोग नहीं किया जाता, वरन हाथ की ऊँगलियाँ

ही कूँची का काम करती हैं। ऊँगलियों और अँगूठे के बीच रंग में भिगोयी रूई के फाये अथवा कपड़े की चिन्दी को रखकर अनामिका ऊँगली से माँडणा की रेखाएँ धरती पर खींची जाती हैं। गेरू की रेखाओं से माँडणा का मूल आधार या खाका तैयार किया जाता है। इसके पश्चात् खड़िया के श्वेत घोल की रेखाओं से लाल रेखाओं के भीतर और बाहर के भाग को आवश्यकता और आकृति के अनुरूप भर दिया जाता है। माँडणा के मूलाधार को सफेद रंग से परिपूरित करना सबसे महत्वपूर्ण और कठिन कार्य है। इसे 'भरत' कहा जाता है। भरत भर जाने के बाद पूरा माँडणा खिल उठता है।

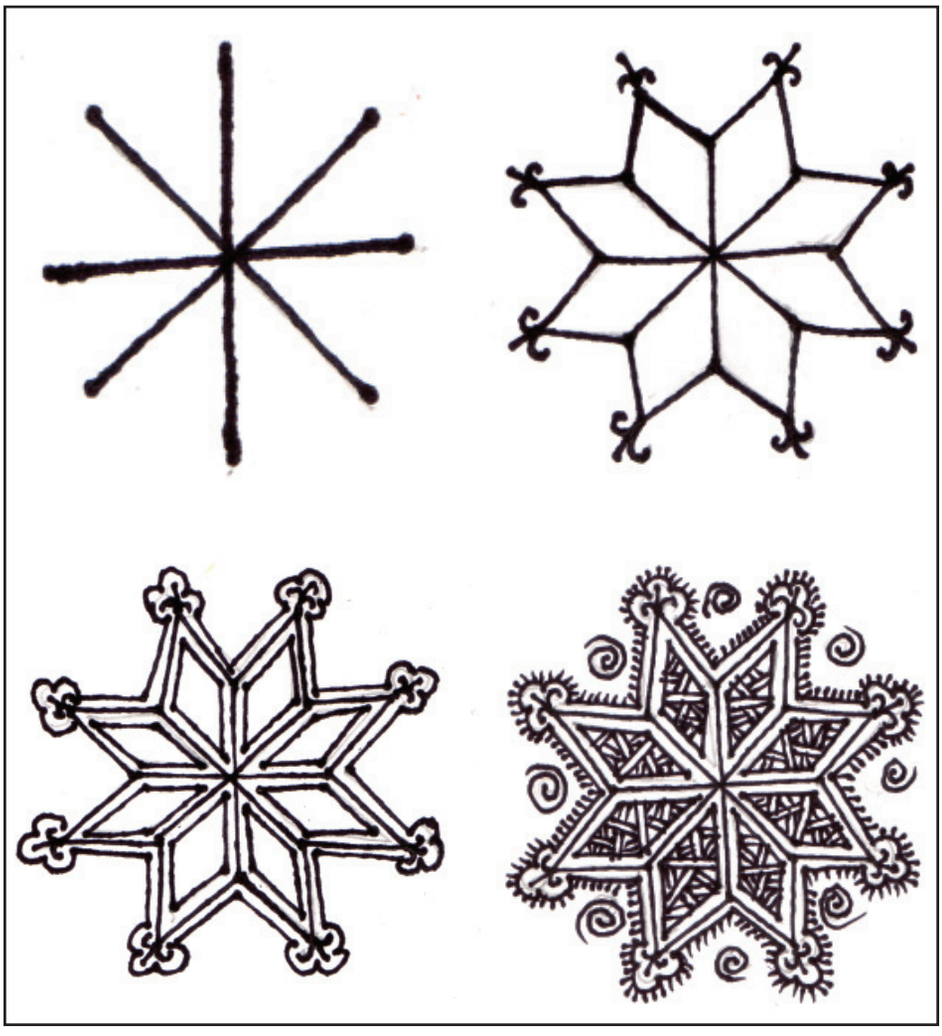

चित्र 8.5

1. सबसे पहले भूमि को गोबर से लेपन करें अथवा गोबर रंग की कोई गहरी शीट लें।
2. माँडणा बनाने के लिये हाथ की ऊँगलियों अथवा कूँची या ब्रुश का उपयोग किया जा सकता है।
3. एक कटोरी में खड़िया तथा दूसरी कटोरी में गेरू का गाढ़ा घोल तैयार कर लें।

4. हाथ की ऊँगलियों और अँगूठे के बीच गेरूवे रंग में भिगोये रूई के फाये या चिन्दी को रखें या ब्रुश रखें।

5. फिर अनामिका ऊँगली के सहारे माँडणे की मूल रेखाएँ खीचें। यह कार्य कागज पर ब्रुश के सहारे कमल का माँडणा बनाने के लिए किया जाये।

6. एक बिन्दु पर चार या छः आड़ी-खड़ी रेखाऐं काटते हुए खीचें। फिर ऊपर की ओर त्रिकोण में सारी रेखाओं को दिये चित्र के अनुसार मिला दें। इस प्रकार कमल के फूल की आकृति बना लें।

7. त्रिकोणों के शीर्ष पर नीचे दिये चित्र के अनुसार छल्ले बना दें।

8. हाथ धो लेने के बाद खड़िया के घोल में भिगोया फोया हाथ में रखें। फिर कमल फूल को भीतर और बाहर सफेद रेखा से घेर दें।

9. बाहर की सफेद रेखा पर खड़ी या तिरछी छोटी रेखाएँ खीचें।

10. अन्दर के सफेद खानों में आड़ी और खड़ी 'भरत' भरें।

11. माँडणों के आसपास छोटे-छोटे अभिप्रायों को उकेरें।

12. आवश्यकतानुसार माँडणा की आकृति बढ़ाई जा सकती है।

प्रायोगिक अभ्यास 1

अब हम माँडणा कला का चित्रण करना सीखते हैं।

प्रथम चरण : सबसे पहले हम अपने धरातल अथवा चित्रभूमि पर पेंसिल से माँडणा का प्रारूप बना लेते हैं। भूमि पर यदि हमें बनाना हो तो हम चौक से या चौक पउडर से भी प्रारूप बना सकते हैं, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।

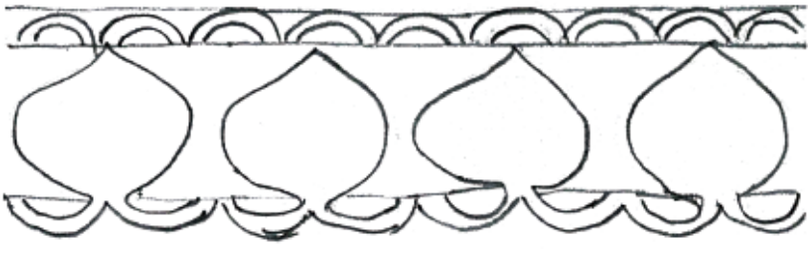

चित्र 8.6

द्वितीय चरण : नीचे दिए चित्र के अनुसार हम चित्र भूमि को गेरू से या पीली मिट्टी से फ्लैट ब्रश से एक सपाट रंग लगाते हैं। इस रंग में पानी की मात्रा ज्यादा होती है, जिससे कि हमारी ड्रांईग रंग भरने के बाद भी नीचे से दिखाई देती रहे। इसके पश्चात् सफेद खड़िया या पोस्टर रंग से चित्र के अनुसार सफेद सीधी लाइन तथा अर्धवृत्ताकार कंगूरे बना लेते हैं।

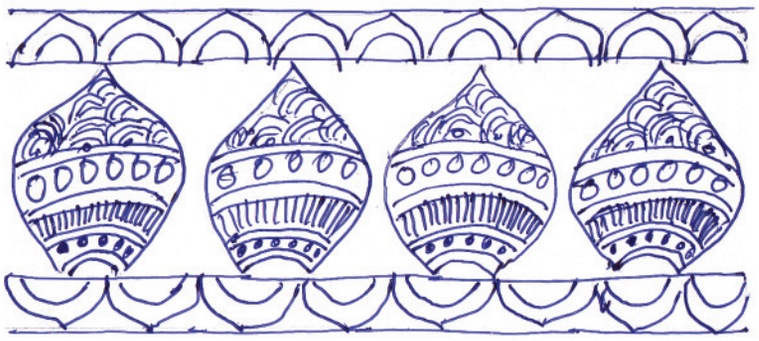

चित्र 8.7

तृतीय चरण : नीचे दिए चित्र के अनुसार सभी कंगूरे बनाने के बाद इनके ऊपर थोड़ी जगह छोड़कर फूल के पत्ती की भाँति आकृति बना लेते हैं। इसके पश्चात् कंगूरे के दूसरी तरफ कमल के फूल की पत्ती या शंख के आकार की आकृति को बना लेते हैं।

चित्र 8.8

चतुर्थ चरण : अब हम इन शंख की आकृतियों को पूरे चित्रतल पर रेखा के साथ-साथ चित्रित कर लेते हैं। जिस प्रकार के कंगूरे हमने एक तरफ बनाऐ थे, वैसे ही कंगूरे हम दूसरी तरफ भी बना लेते हैं। इसके पश्चात् शंखनुमा आकृति को तिरछी या क्षैतिज रेखाओं से तथा वृत्ताकार रेखाओं को भर कर शंख को अलंकृत कर लेते हैं, जिससे वह बहुत सुन्दर हो जाता है। यह माँडणा हम घर की देहरी तथा दरवाजे के अन्दर तथा बाहर की तरफ बना लेते हैं, जो चौखट माँडणा के नाम से प्रसिद्ध है।

चित्र 8.9

प्रायोगिक अभ्यास 2

अब हम दूसरी तरह के माँडणा चित्र बनायेंगे।

यह माँडणा घर के केन्द्रिय भाग, घर के आंगन में अथवा चौक में बनाया जाता है। इस माँडणा में एक आठ पंखुड़ी वाला ज्यामितीय आकृति फूल बनाया जाता है। जिसे चार वृत्त घेरे हुए होते हैं। इन वृत्तों को हम पत्तियों तथा पुष्पों के द्वारा अलंकृत कर देते हैं।

प्रथम चरण : इस माँडणा को बनाने के लिए सबसे पहले एक केन्द्रीय बिंदु लेते हैं। इसके चारों तरफ अलंकरण बनाया जाता है। इस बिंदु के चारों तरफ एक वृत्त बनाते हैं। इस वृत्त को मिलाते हुए चार रेखाएं एक दूसरे को काटते हुए बनाते हैं। इन रेखाओं को जब वृत्त से मिलाते हैं, तो आठ पत्तियों के पुष्प का निर्माण होता है। इस वृत्त के बाहर कुछ दूरी पर दूसरा बड़ा वृत्त बनाते हैं। इस वृत्त में चारों तरफ से अन्दर की तरफ तीन पत्तियों वाले पुष्प बनाते हैं। जैसा कि नीचे दिए गये चित्र में बनाया गया है। इन वृत्त के बाहर फिर एक बड़ा वृत्त बनाते हैं। इस वृत्त में 16 पत्तियाँ बनाते हैं। इस पत्तियों के बीच में 16 फूल भी बनाते हैं।

चित्र 8.10

द्वितीय चरण : इसके पश्चात् वृत्त के चारों तरफ 16 त्रिभुजाकार की पत्तियाँ तथा इन पत्तियों के बाहर कुछ दूरी छोड़कर बाह्य रेखा बनाते हैं। अब हमारा आठ पंखुड़ी के फूल और 16 पत्तियों वाला माँडणा तैयार हो जाता है।

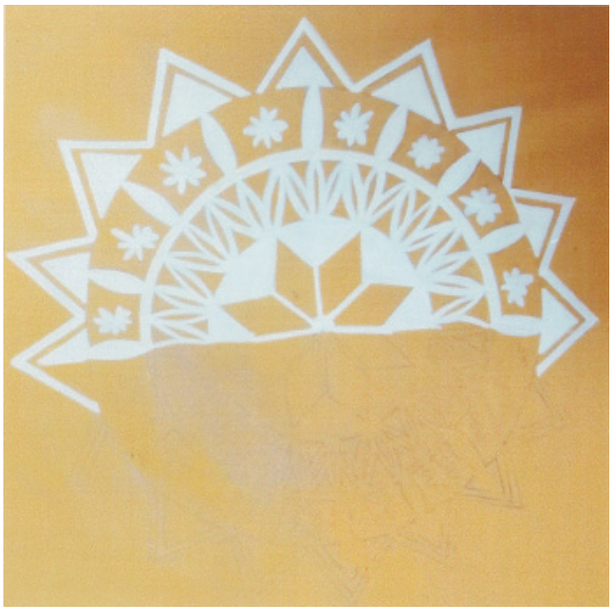

चित्र 8.11

तृतीय चरण : इस माँडणे को रंगने के लिए हम इसे चार भागों में विभाजित करके सबसे पहले एक भाग को सफेद पोस्टर रंग से या खड़िया रंग के ब्रुश की सहायता से सीधी तथा वृत्ताकार रेखायें खींच लेते हैं।

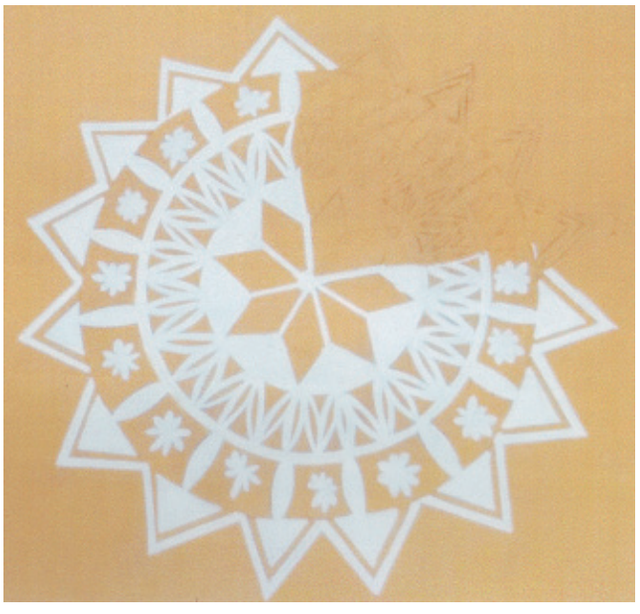

चित्र 8.12

जिस प्रकार से हमने 1/4 भाग को पेन्ट की सहायता से बनाया, उसी प्रकार पुनरावृत्ति करते हुए आधे भाग को बना लेते हैं। आधे भाग के बन जाने के पश्चात् हमें फूल की चार पत्तियाँ दिखाई

देने लगेंगी तथा माँडणा का आधा भाग हमें दिखाई देने लगेगा। यदि हमें दीवार से लगता हुआ कोई अलंकरण बनाना हो, तो वह इस प्रकार से दिखाई देगा।

चतुर्थ चरण : बचे हुए 1/4 हिस्से के लिए भी यही विधि दोहरायें। माँडणा के आखिरी भाग को बनाने के पश्चात हमारा माँडणा पूरा वृत्त रूप में आठ पंखुड़ियों वाला फूल तथा 16 पत्तियों वाला बाहरी वृत्त तथा उसमें 16 छोटे-छोटे पूरे खिले हुए कमल के पुष्प दिखाई देगा। इस माँडणे को हम जितना चाहे आगे इसी तरह से वृत्त बना-बना कर फैलाते चले जायेंगे।

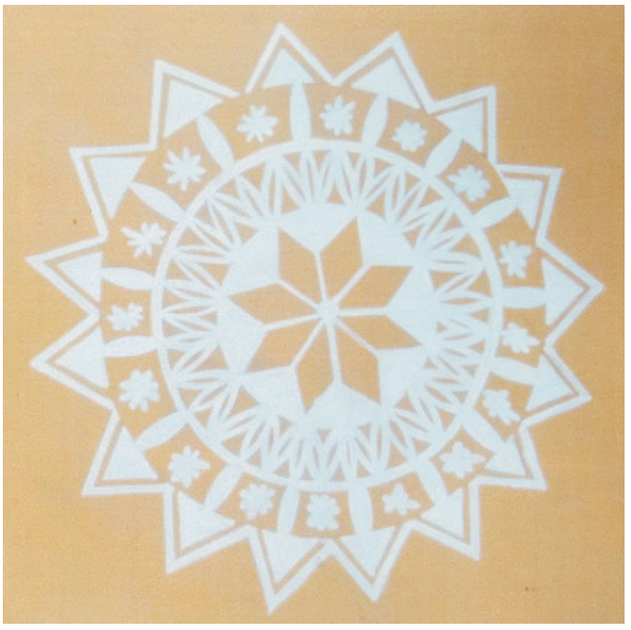

चित्र 8.13

प्रायोगिक अभ्यास 3

अब हम एक और माँडणा का चित्रण करना सीखेंगे।

प्रथम चरण : किसी भी माँडणा को चित्रित करने के लिए हम उस माँडणा के केन्द्र से रेखाओं के माध्यम से प्रारम्भ करते हैं। एक केन्द्र बिन्दु लेकर उसके चारों तरफ कुछ दूरी पर छह बिन्दु लेते हैं। इन बिन्दुओं को हम केन्द्र से सीधी मिलाते हुए रेखा लेकर दो त्रिभुज बनाते हैं। इनके चारों तरफ 12 त्रिभुजों का निर्माण करते हैं। नीचे दिए गए चित्र को देखें। अब यह छह पत्तियों के फूल की एक सुन्दर आकृति बन जाती है। इस फूल को घेरते हुए एक षटकोण की आकृति थोड़ा सा अन्तराल देते हुए बना लेते हैं। इस षटकोण के चारों तरफ छह त्रिभुज अन्दर की तरफ तथा छह त्रिभुज आकृतियां बाहर की तरफ जाती हुई बनाते हैं। बाहर वाले त्रिभुज के मुख्य कोने में दोनों दिशाओं में जाते हुए कंगूरे बना कर इस त्रिभुज आकृति को और आकर्षक बना लेते हैं।

इन कंगूरों के बीच में चार बिन्दु बना कर सुन्दर रूप देते हैं। हमने जो षटकोण बनाया था, उसके बाहर वाले कोणों से छह लम्बी कोणीय आकृतियां बना लेते हैं। इसके ऊपर एक गोल आकृति

बना लेते हैं। अन्त में ऊपर दो अर्धवृत्ताकार रेखाऐं खींच लेते हैं। इनमें बाहरी रेखा के ऊपर बाहर को जाती हुई किरणें जैसी रेखाएं बनाकर एक सुन्दर चित्र का सृजन कर लेते हैं।

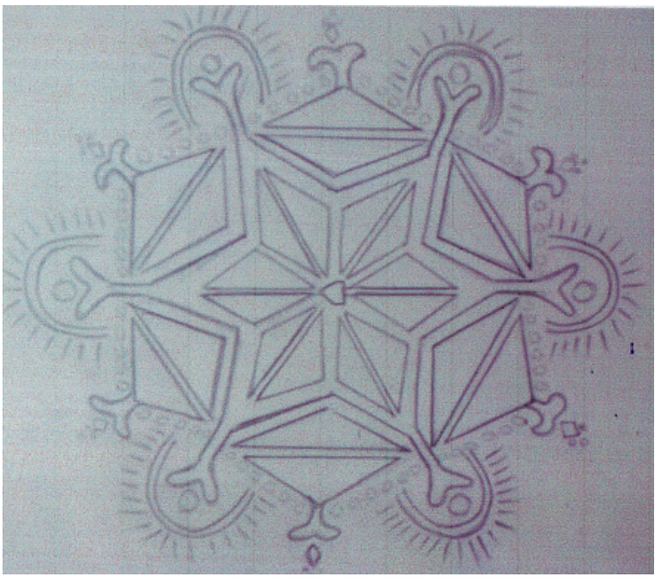

चित्र 8.14

चरण 2 : अब इस रेखांकित माँडणा में सफेद खड़िया या पोस्टर रंग से तूलिका के माध्यम से लाइनों को बना लेते हैं। कुछ त्रिभुज आकार वाली पत्तियों को सफेद रंग से भर देते हैं।

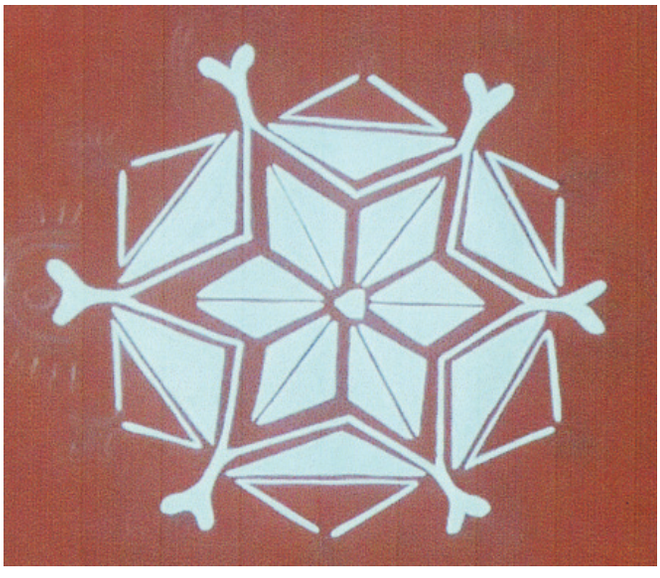

चित्र 8.15

चरण 3: इस माँडणा की चित्र भूमि के सफेद रंग के अतिरिक्त बाहरी हिस्सों को चारों तरफ घूमकर तूलिका से पूरा पेन्ट कर लेते हैं।

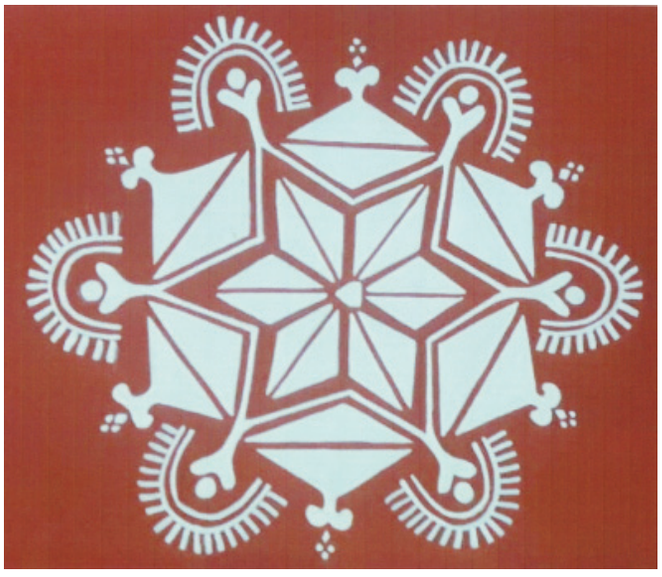

चित्र 8.16

आपने क्या सीखा

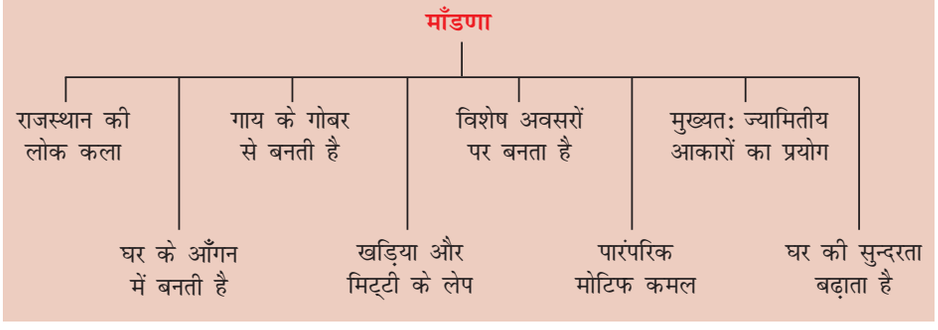

पाठांत प्रश्न

1. चार पँखड़ी कमल का माँडणा बनाइये।
2. अष्ट कमल दल का माँडणा बनायें।
3. सोलह पँखड़ी कमल दल माँडणा बनायें।
4. लक्ष्मी के रथ का माँडणा बनायें।
5. चौखट माँडणा पगल्या सहित बनायें।
6. माँडणा के महत्व पर टिप्पणी लिखिए।

शब्दावली

माँडणा	:	भूमि पर बनाये जाने वाले आलेखन
गेरू	:	मिट्टी लाल
खड़िया	:	सफेद मिट्टी
चौखट	:	दरवाजे की चौखट की लकड़ी का नीचे का हिस्सा या घटक जो जमीन पर रहता है
अनामिका	:	सबसे छोटी उँगली के पास की उँगली
तुलसी क्यारा	:	आँगन में मिट्टी से बना चौकोर ऊँचा चौरा, जिस पर तुलसी का पौधा लगाया जाता है
हिरमची	:	मिट्टी का गहरा लाल रंग
पगल्या	:	पद चिन्ह माँडणा
साँतिया	:	स्वास्तिक